जिनाईदा अलेक्सान्द्रोवा

मेरा भालू

ज़िनाईदा
अलेक्सान्द्रोवा

मेरा भालू

बिजली के चूल्हे पर दलिया बने यहां
रे, वह चमचा बड़ा हमारा, गया कहां?
पंजे अपने तुम धुलवा लो,
बैठे मज़े से खाना खा लो।

लो, अब तुम नेप्किन बंधवाओ,
कटलेट खाओ, टाफ़ी खाओ।
दूध बहुत जल्दी से पीकर
जाओ बाहर, घूमो जी भर।

ये हैं मुर्ग़े-मुर्ग़ियां
और बत्तखें, इधर, यहां,
काला कुत्ता उधर, वहां।

साथ नहीं हम इसको लेंगे,
बस, दोनों ही सैर करेंगे।

पिये नांद से पानी यह छोटा बकरा
तुम्हें देखता है गुस्से से भरा-भरा।

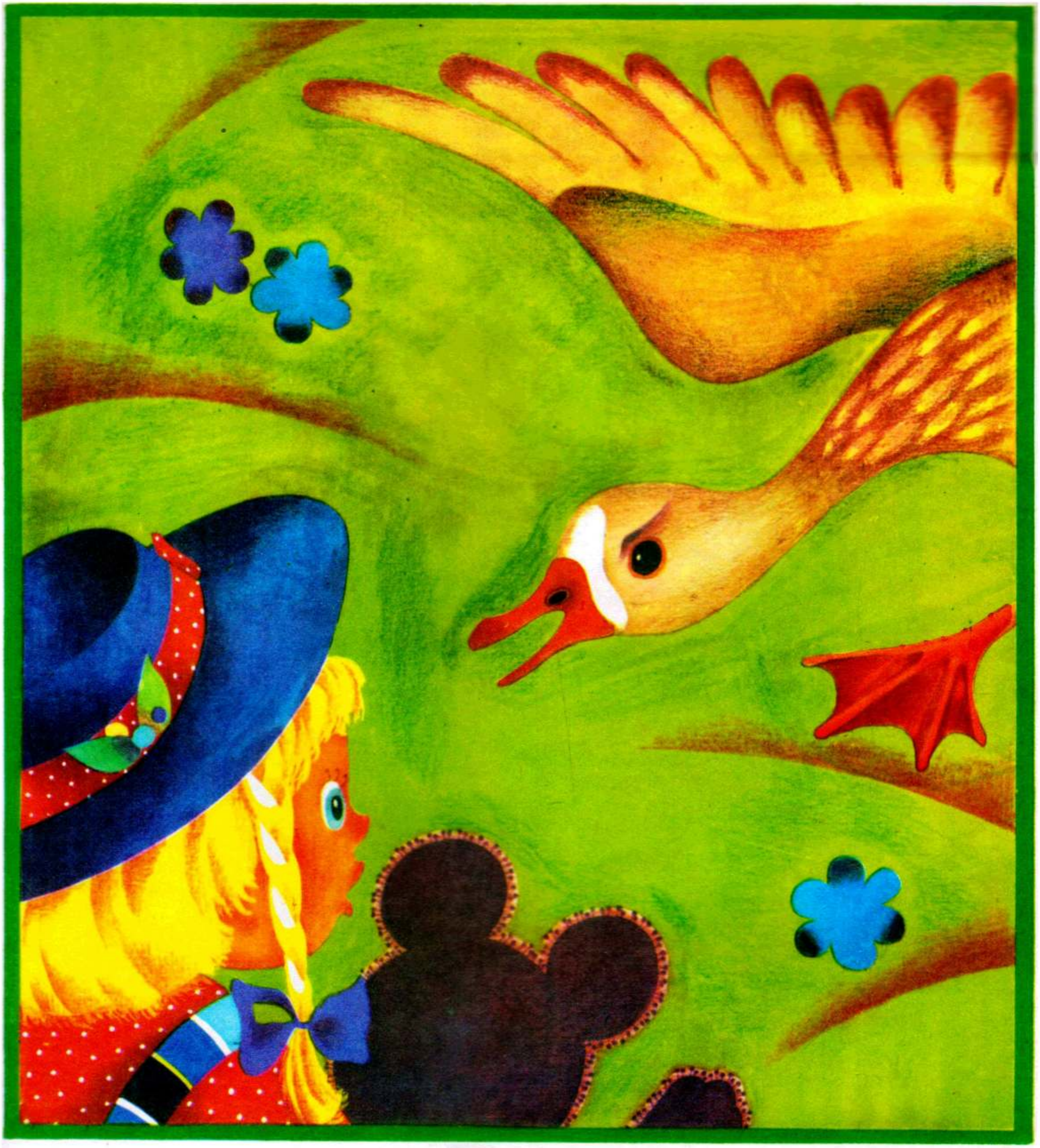

यह कलहंस, न इससे डर,
डरती रहती स्वयं मगर।

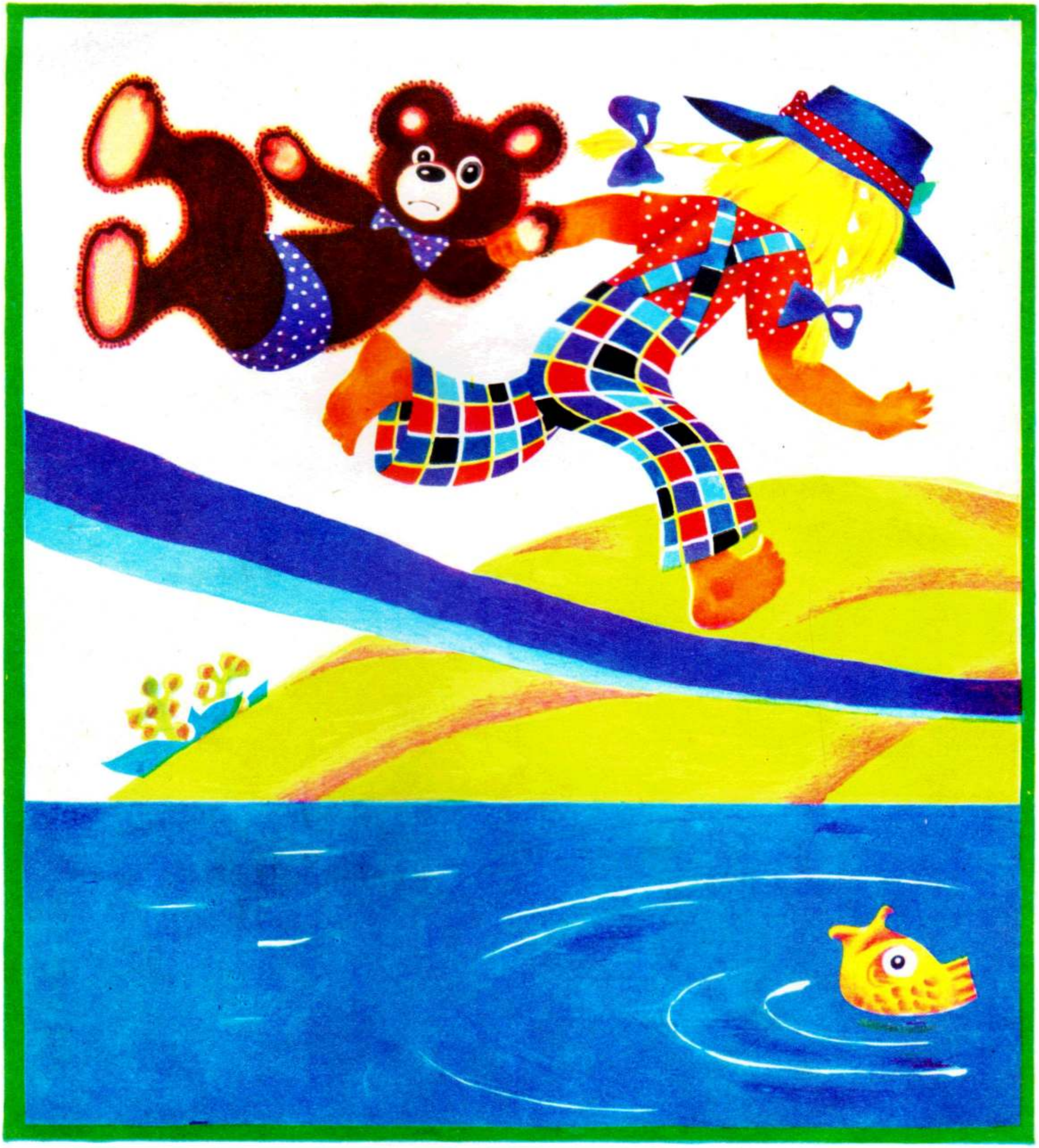

संकरे-से तख़्ते पर चलकर
चलें नहाने हम उस तट पर
हम तैरेंगे, संवलायेंगे,
कपड़े अपने धो लायेंगे।

नन्हा भालू उछला-कूदा, हो चंचल,
डांवांडोल हुआ तब वह हल्का-सा पुल

भालू डूबे औ' पानी में पड़े भंवर,
कुत्ते, मदद करो तुम , जल्दी से आकर !

बना स्पंज-सा भालू मेरा,
कोट मख़मली सूखे तेरा।

मां निश्चय ही झल्लायेगी,
अब मेरी शामत आयेगी।

З. Александрова

МОЙ МИШКА

на языке хинди

Z. Alexandrova

MY BEAR.

in Hindi

अनुवादक : मदनलाल 'मधु'

चित्रकार : स० कालाचेव

© Издательство „Прогресс", 1981

© रादुगा प्रकाशन ० मास्को ० १९८३

$A\frac{4803010102-436}{031(01)-83}391-83$

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

रादुगा प्रकाशन
मास्को
१९८३